फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

कहत कबीर

जब परेशान लोग छोटी चालाकियाँ करते हैं तब अपनी सहानुभूति के स्रोतों को गन्दलाते- सुखाते हैं।

नई सीरीज नम्बर **185** नवम्बर **2003**

आप-हम क्या-क्या करते हैं... (6)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने- फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब- तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत- ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ✱ सहज- सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर- माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड- भाट- चारण- कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग- रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना- उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर- माथों वाले पिरामिडों के ताने- बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना- रूपी बातें करते हैं। ✱ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱ हमें लगता है कि अपने- अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल- उबाऊ- नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच- नीच के स्तम्भों के रंग- रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर- माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन- मस्तिष्क में अक्सर कितना- कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत- ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी हैं।

✱ 47 वर्षीय डॉक्टर : सामान्यतः अच्छी- गहरी नींद आती है। स्वाभाविक तौर पर उठता हूँ और अच्छा लगता है उठना – ऐसा नहीं होता कि लो एक और दिन आ गया। इसका कारण? शायद मेरे दो फैसले – रिश्वत नहीं लेना और ड्युटी के बाद पैसों के लिये कोई धन्धा नहीं करना।

ड्युटी के समय से दो घण्टे पहले उठता हूँ। दाँत साफ कर दाढी बनाता हूँ तब तक पत्नी चाय बना लाती है। चाय के संग हम मिल कर हिन्दी अखबार पढते हैं। फिर टॉयलेट में मैं अंग्रेजी अखबार पढता हूँ– सुर्खियों पर नजर भर दौड़ाता हूँ, रुचि समीक्षा- विश्लेषण वाले आर्थिक- सामाजिक लेख में (अगर स्वास्थ्य सम्बन्धी नहीं है तो सम्पादकीय नहीं पढता)। स्नान कर ड्युटी से आधा घण्टा पहले तैयार हो जाता हूँ। एक महिला आ कर घर की सफाई करती है और नाश्ता बनाती है। हम पति- पत्नी इक्ट्ठा नाश्ता करते समय टी.वी. पर समाचार लगा देते हैं। सुबह अगर कोई मिलने आ जाये तो दिक्कत होती है।

चिकित्सकों की सुबह- सुबह अनौपचारिक सभा का रिवाज है। दुआ- सलाम और सामान्य आदान- प्रदान होते हैं। पहले इसमें सट्टा बाजार (शेयर मार्केट) पर चर्चायें होती थी पर शुक्र मनाता हूँ कि 1992 के घोटाले में डॉक्टरों द्वारा भी काफी रकम डुबो देने के बाद से सुबह- सुबह निन्यानवे की चर्चा का यह चक्कर बन्द हो गया है।

सभा के बाद सब अपने- अपने विभाग में। सामान्य कार्य- दौरा। सरकारी स्वास्थ्य संस्थान अपर्याप्त तो हैं ही, चिकित्सकों व अन्य कर्मियों पर बहुत- ही अधिक कार्य का भार भी है। अप्रत्यक्ष ढँग से वेतन में कटौती का सिलसिला भी जारी है– तनखा बढना तो गये जमाने की बात हुई, अब तो जो है उसे (उसकी कीमत को) बचाने का प्रश्न है। इधर प्रशासन ने हमें दिन के 24 घण्टे, महीने के तीसों दिन सरकार के नौकर के तौर पर लेना बढा दिया है। ग्रामीण व शहरी गरीबों के लिये आज जीने की जगह तो है ही नहीं, कम से कम शान्ति से मरने की जगह तो हो परन्तु राजनेता नाटक करते हैं। सरकार की नीति ही स्वांग करना, साँग करना है – "स्वास्थ्य आपके द्वार" – और हमें कठपुतलियाँ बनाने पर जोर है। स्थानान्तरण की तलवार प्रत्येक सरकारी कर्मचारी पर हर समय लटकती ही रहती है – मैंने भी भुगंता है और मैनेज किया है। वैसे, सत्ता के निकट होने का रुतबा मैंने भी कुछ महसूस किया है परन्तु मेरे सचेत प्रयास रहे हैं कि निज हित में उसका कोई उपयोग नहीं करूँ।

सरकारी नौकरी में विशेषज्ञता का सामान्य तौर पर कोई अर्थ नहीं है – सन् 1940 वाला ढर्रा ही चल रहा है। कहीं भी ड्युटी लगा देते हैं। **शिफ्टों में ड्युटी मुझे बिलकुल रास नहीं आती पर करनी पड़ी है।** हालाँकि काम के घण्टे बढाने की कसरत चल रही है पर शुक्र मनाता हूँ कि अभी अस्पतालों में सामान्य तौर पर चिकित्सकों की ड्युटी 6 घण्टे की है। सैंकड़े की सँख्या में मरीजों को निपटाना.....

पुराना अथवा बूढा हो गया हूँ शायद। सहकर्मी चिकित्सकों में हिसाब लगाने की बढती प्रवृति से दुख होता है – मरीज 100- 200- 500 दे अन्यथा टालना- झिड़कना! दस साल पहले ऐसे पैसे लेने को गलत मानने वाले चिकित्सक 30- 40 प्रतिशत थे पर अब मात्र 10- 15 प्रतिशत रह गये हैं। मेडिकल कालेज में सोचता था कि जहाँ रहूँगा वहाँ मिल कर ऐसी प्रवृति को रोकेंगे लेकिन अब स्वयं को कमजोर, असहाय पाता हूँ। इन हालात में मुखरता से विरोध करने का कोई मतलब नहीं लगता।

डॉक्टरों में धन्धेबाजी बढती जा रही है। **जानबूझ कर गलत फैसले लेना - ऑपरेशन की जरूरत नहीं है फिर भी ऑपरेशन करना क्योंकि ज्यादा पैसे मिलेंगे!** कार, मकान, कम्प्युटर, बच्चे महँगे विद्यालयों में, सम्पत्ति की ख्वाहिशें.... बेइमानी करके भी किस्तों में दिक्कत। आपसी रिश्तों में तनातनी और टकराव बढे हैं।

2 अथवा 3 बजे ड्युटी समाप्त। बाई भोजन तैयार किये रहती है – पत्नी और मैं इक्ट्ठे खाना

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : 37 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7 तारीख तक दे ही देना ★ क्लच आटो, 12/4 मथुरा रोड़, अगस्त की तनखा 28 सितम्बर तक दी और सितम्बर की 13 अक्टूबर तक देनी शुरू नहीं की थी; **★ भोगल्स शूज**, डी एल एफ, सितम्बर का वेतन 15 अक्टूबर तक नहीं – श्रम निरीक्षक कहता है दे देंगे; **★ ब्रॉन लैबोरेट्री,** 13 इन्डस्ट्रीयल एरिया, अगस्त की तनखा 18 व 25 सितम्बर को, सितम्बर का वेतन 17 अक्टूबर तक नहीं – दो साल से पी.एफ. जमा नहीं; **★ सी.एम.आई.,** 71 सैक्टर-6, अगस्त की तनखा 13-14 अक्टूबर को और सितम्बर का वेतन 23 अक्टूबर तक नहीं – दो साल से डी.ए. तथा बोनस नहीं; **★ मेल्को प्रिसिजन**, 4 सैक्टर-27 ए, सितम्बर की तनखा 17 अक्टूबर तक नहीं – दो साल से पी.एफ. जमा नहीं; **★ आर.आर. आटोमोटिव,** 54 इन्डस्ट्रीयल एरिया, वेतन किस्तों में, जुलाई का 14 अक्टूबर तक पूरा नहीं दिया और अगस्त व सितम्बर की तनखायें देनी ही शुरू नहीं की थी; **★ एस्कोर्ट्स आटो-कम्पोनेन्ट्स,** सैक्टर-6, अगस्त और सितम्बर की तनखायें 13 अक्टूबर तक नहीं; **★ रोलाटेनर्स,** यहाँ तीन प्लान्ट, महीने के अन्तिम दिन वेतन देने का रिवाज तोड़ दिया है और सितम्बर की तनखा 9 अक्टूबर तक नहीं दी –तीन साल का पी.एफ. जमा नहीं; **★ कास्टमास्टर,** 46 सैक्टर-6, स्थाई मजदूरों को सितम्बर की तनखा 13 अक्टूबर तक नहीं; **★ सुपर स्विच,** सितम्बर का वेतन 18 अक्टूबर तक नहीं – हैल्परों को 1500 रुपये तनखा, ई. एस.आई. तथा पी.एफ. नहीं; **★ इन्जेक्टो....**

कानून : 8 घण्टे की ड्युटी - तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगनी दर से ★ बाटा, इन्डस्ट्रीयल एरिया, इन्जेक्शन मोल्डिंग मशीनों पर ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों द्वारा 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में उत्पादन – सुबह 7.30 से रात 7.30 तक और रात 7.30 से अगली रोज सुबह 7.30 तक। पे-स्लिप नहीं और ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से। बाटा फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये 300 मजदूर रखे हैं जो स्थाई मजदूरों के एक तिहाई वेतन में उत्पादन कार्य करते हैं। **★ बी.एल. कन्टेनर,** 87 व 95 सैक्टर-24, हर रोज-महीने के तीसों दिन 12 घण्टे ड्युटी और हैल्परों को इसके लिये 2700 रुपये देते हैं जो कि ओवर टाइम को ध्यान में रखने पर 42 रुपये दिहाड़ी बनती है; **★ बी.के. जी. इन्टरप्राइज,** 36 सैक्टर-4, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट में **जी.ई. मोटर** का माल बनता है – हैल्परों को 1350 और ऑपरेटरों को 15-1600 रुपये महीना तनखा तथा ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से; **★ टालब्रोस**, 74 सैक्टर-6, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से – हैल्परों को 1200-1400 और ऑपरेटरों को 1800-2200 रुपये महीना तनखा तथा ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं; **★ फरीदाबाद बोल्ट टाइट,** 43 सैक्टर-4, 12 घण्टे की ड्युटी – ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 1200-1300 रुपये महीना तनखा; **★ अल्पाइन अपैरेल्स,** 24 सैक्टर-27 ए, सुबह 9 से शाम 5.30 तक की एक ही शिफ्ट है परन्तु रात को 12 बजे तक, अगली रोज की सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; **★ फ्रिक इण्डिया,** 13/3 मथुरा रोड़, स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम काम का भुगतान डबल रेट से किया जाता है लेकिन कैजुअल वरकरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से; ★....

कानून : हरियाणा में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम दिहाड़ी 84 रुपये 53 पैसे और सप्ताह में एक छुट्टी व 8 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर महीने में अकुशल श्रमिक-हैल्पर की कम से कम तनखा 2197 रुपये 84 पैसे। फरीदाबाद में श्रम विभाग में अक्टूबर-अन्त में प्राप्त हरियाणा सरकार के कथन अनुसार जनवरी-जून 03 के दौरान मजदूरों के लिये महँगाई बिलकुल नहीं बढी इसलिये डी.ए. का आँकड़ा शून्य है। और, इसी हरियाणा सरकार ने अपने कर्मचारियों के लिये इसी जनवरी-जून 03 के दौरान महँगाई इतनी बढी बताई है कि डी.ए. में वेतन के चार प्रतिशत की वृद्धि की है - डी.ए. के कम से कम 102 रुपये जुलाई 03 से वेतन में बढाये हैं। ★ बाकमैन, 10 सैक्टर-6, हैल्परों को 1400 रुपये महीना तनखा – छापा पड़ा था, रफा-दफा कर दिया; **★ इण्डिया फोर्ज,** 28 सैक्टर-6, हैल्परों को 1200 रुपये तथा ऑपरेटरों की 1700-1800 रुपये महीना तनखा – जिनका प्रोविडेन्ट फण्ड है वे अपने पैसे निकालना चाहते हैं तब ठेकेदार 4-500 रुपये रिश्वत लेते हैं;...और, **★ श्रीलाल अलॉयज मजदूर :** " सोफ्ता मोड़, सीकरी के पास स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने जिन्हें स्वयं भर्ती किया है उन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देती लेकिन ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को यह दिये गये हैं। कम्पनी के राज का तो पता नहीं पर ठेकेदार कहता है कि छापे के समय लफड़े से बचने के लिये ऐसा करने को वह मजबूर है। कम्पनी स्वयं रखों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देती है परन्तु ठेकेदार ने 1700 रुपये महीना तनखा लगाई है और इन 1700 में से 230-240 रुपये ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के काट लिये जाते हैं। बीच-बीच में ठेकेदार एक महीने ई. एस.आई. तथा पी.एफ. के पैसे नहीं काट कर पूरे 1700 रुपये देता है – यह कार्यरत रखते हुये कानूनी खानापूर्ति के लिये ब्रेक दिखाना है। फैक्ट्री में दो शिफ्ट हैं– सुबह 8 से शाम 7 बजे तक और शाम 7 से अगली सुबह 8 बजे तक। एक महीने में 125 घण्टे ओवर टाइम हो जाता है और इसके पैसे सिंगल रेट से। रात के 13 घण्टे काम को 12 घण्टे कर, 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट बनाने की बात कम्पनी मानती ही नहीं। और, प्रोडक्शन मैनेजर बहुत गाली-गलौच करता है।"

लुधियाना से (पेज चार का शेष)

उत्पादन पूरा नहीं होने पर साप्ताहिक छुट्टी वाले दिन मुफ्त में फैक्ट्री में काम कर उत्पादन पूरा करो। यह अन्धेरगर्दी **हीरो साइकिल** कम्पनी ने मचा रखी थी। इस सब के खिलाफ लुधियाना में हीरो साइकिल फैक्ट्री में काम करते 3500 मजदूर चाणचक्क उत्पादन बन्द कर फैक्ट्री गेट पर बैठ गये। **मजदूरों के होने की हकीकत ने स्वयं को चाणचक्क चक्का जाम करने में अभिव्यक्त किया था।** अन्य कम्पनियों की ही तरह हीरो कम्पनी ने भी मजदूरों के होने की हकीकत पर परदे डालने को अपना फौरी व मूल कार्य तय किया। कम्पनी ने तत्काल पंजाब सरकार के एक लेबर अफसर को बुलाया और माँगों को मानने का आश्वासन श्रम विभाग अधिकारी के जरिये दे कर मजदूरों को फैक्ट्री में ले गये। और फिर, मजदूरों के होने के प्रदर्शन को मजदूरों का नहीं होना दर्शाने, प्रचारित-प्रसारित करने के लिये कम्पनी ने छाँट-छाँट कर मजदूरों को आरोप-पत्र दे निलम्बित करना आरम्भ किया। इस प्रकार 15 मजदूरों का गेट रोक दिया गया तब कम्पनी के साथ जुगलबन्दी में यूनियन ने आगे आ कर 18 सितम्बर से हड़ताल का ऐलान कर दिया। हीरो साईकिल फैक्ट्री में कार्यरत 3500 में से 2500-3000 मजदूर 18 से 28 सितम्बर तक हड़ताल पर रहे। कम्पनी और यूनियन नें मजदूरों पर जकड़ कसने के बाद 7 निलम्बित को ड्युटी पर लिये जाने का समझौता कर उत्पादन कार्य शुरू करने का ऐलान किया। इसे कम्पनी की बड़ी जीत दर्शाया जा रहा है लेकिन लुधियाना व आस-पास के कई लोगों ने हीरो साइकिल कम्पनी मजदूरों के कन्धों से कन्धे मिला कर एक-दूसरे के होने की बुनियाद को गहरा व पुख्ता किया है।

–अरविन्द, लुधियाना (भाषा हमारी।)

और बातें यह भी

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मजदूर : "सैक्टर-25 स्थित विशाल फैक्ट्री में घातक एस्बेस्टोस का धड़ल्ले से इस्तेमाल जारी है। एस्बेस्टोस से होने खतरनाक बीमारियों को छिपाने के लिये कम्पनी ने स्थाई मजदूरों को निकालने और ठेकेदारों के जरिये भर्ती करने का **(बाकी पेज तीन पर)**

आप-हम क्या-क्या करते हैं.... (पेज एक का शेष)

खाते हैं। गर्मियों में भोजन उपरान्त दो- ढाई घण्टे सोता हूँ। अपनी स्वयं की दिनचर्या नियमित करने में मुझे कोई दिक्कत नहीं होती परन्तु जहाँ अन्य का संग आवश्यक होता है वहाँ चीजें अनियमित हो ही जाती हैं। मैं अकेला तैर लेता हूँ पर वालीबाल तो अकेला नहीं खेल सकता! सहकर्मी चिकित्सक ड्युटी के बाद किसी न किसी धन्धे में जुट जाते हैं। काफी लोग कोशिश करते रहते हैं कि मैं भी कोई कारोबार करूँ परन्तु मैंने समझा व तय किया हुआ है कि **समय मुझे खुद को चाहिये। ड्युटी के बाद के समय को मैं पैसे कमाने में लगाने से साफ-साफ इनकार करता हूँ।**

मेरा बचपन अभावों से घिरा था। सर्दियों में स्वेटर नहीं होती थी – सर्दियों में स्वेटर तो होनी ही चाहिये, मुझे गरीब नहीं होना चाहिये! परन्तु कार- बँगले- नौकर की कभी ख्वाहिश नहीं रही। मेडिकल कालेज के खर्चे के लिये परिवार को जमीन गिरवी रखनी पड़ी थी। अब वाले खर्चे होते तो मेडिकल कालेज जाता ही नहीं। और, नौकरी के लिये डॉक्टरों से अब वाली 5 लाख रुपये रिश्वत ली जा रही होती तो मैं सरकारी नौकरी में नहीं होता। मेरी प्रेरणा मेरी माँ रही हैं। लड़कियों- महिलाओं का जमघट लगा रहता था माँ के इर्द- गिर्द और वे कपड़ा बुनने, अच्छा भोजन बनाने, नृत्य ... में सहयोग- सहायता- सुझाव देती रहती थी। **दुनियाँ में बहुत कुछ हो रहा है जिसमें मैं योगदान दे सकता हूँ। मेरी दिली इच्छा सकारात्मक योगदान की रहती है। चीजें सुधरती हैं तो मुझे अच्छा लगता है। लोगों को सहायता करने में मुझे मजा आता है हालाँकि दुनियादारी के उलट मेरी यह प्रवृति पत्नी को पसन्द नहीं है। एक सहृदय-समझदार व्यक्ति वाली पहचान प्राप्त करने की मेरी चाहंत है।** किसी का मुझ पर दया दिखाना मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। मैं कमजोरी के आधार पर नहीं बल्कि अपनी खूबियों के आधार पर पहचान चाहता हूँ।

मेडिकल कालेज में ही मैंने स्वास्थ्य की समस्याओं पर अध्ययन आरम्भ कर दिया था। मेरा जोर सामुदायिक स्वास्थ्य पर रहा है जिसमें उपचार एक अंश है। स्वास्थ्य की देखभाल में समुदाय की भागीदारी द्वारा भ्रष्टाचार, लापरवाही आदि से आसानी से निपटा जा सकता है। इन वर्षों के अनुभव के दृष्टिगत इसमें मुझे अब खतरा यह नजर आता है कि समुदाय की भागीदारी का अर्थ समुदाय में दबदबे वालों की भागीदारी बन कर कमजोर लोगों के लिये फिर कोई स्थान नहीं बचता। स्वास्थ्य पहले अथवा समाज परिवर्तन पहले? समाज परिवर्तन ... लेकिन जो समाज बदलने के ठेकेदार बने हैं वे मुझे ऐसा करने में अक्षम लगते हैं। ये मठ हैं, अपने ढाँचे को बनाये रखना इनकी प्राथमिकता है। इसलिये समाज परिवर्तन के क्षेत्र में यह महत्वहीन हैं – पार्टियों से लड़ाई करने अथवा दोस्ती करने में कोई तुक नहीं है। इन्हें अनदेखा करना ही मुझे उचित लगता है। **विवेक अनुसार व्यवहार नई राहें खोलेगा।**

तैराकी- टहलने- खेलने के बाद शाम साढे छह बजे चाय- नाश्ता करता हूँ। फिर कुछ देर टी.वी. और जरूरत हुई तो बाजार जाना। रात के भोजन से पहले पड़ोसियों के साथ एक घण्टा बैठता, बातचीत करता हूँ। रात का भोजन पत्नी तैयार करती है और 9 बजे खाना खा कर साढे दस तक टी.वी.। ग्यारह बजे हम सो जाते हैं।

उगता सूर्य मेरे मन को उल्लास से भर देता है। सुबह सैर करने को मिल जाता है तब मन विचारमग्न हो जाता है। ताज्जुब होता है कि 1987 तक भारत सरकार की कोई औषधी नीति ही नहीं थी। मात्र एक अधिनियम था जिसके तहत दस्तावेज में दर्ज दवाइयों की बिक्री का प्रावधान था। दवाइयों के मूल्यों पर कोई नियन्त्रण नहीं था और 1987 के **औषधी मूल्य नियन्त्रण आदेश का देशी-विदेशी, राष्ट्रीय-बहुराष्ट्रीय दवा निर्माता कम्पनियों ने मिल कर विरोध किया।** कम्पनियों के विरोध के कारण 1987 में सिर्फ 260 दवाइयों पर ही आदेश लागू हुआ और हर दो वर्ष में समीक्षा के चलते आज मात्र 80 दवाइयाँ ही इसके दायरे में हैं। जानते हैं आदेश का दायरा? उत्पादन के खर्च से 50 **से 500 प्रतिशत अधिक तक ही दवा पर मूल्य अंकित करना!** और, उत्पादन खर्च में थे: दवा के उत्पादन का वास्तविक खर्च + अनुसन्धान के खर्च + पेटेन्ट करने के खर्च + ब्राण्ड नाम के खर्च। **जेनरिक नाम और ब्राण्ड नाम का भेद अपने आप में अजूबा है।** ज्वर- हरारत की दवा पैरासिटामोल की टिकिया का मूल्य 16 पैसे है। पैरासिटामोल दवा का जेनरिक नाम है। इसी पैरासिटामोल की गोली क्रोसिन के ब्राण्ड नाम से 56 पैसे की हो जाती है! ब्राण्ड नाम प्रचारित करने वाले फिल्मी सितारों, क्रिकेट स्टारों के लटके- झटके जनता को बहुत महँगे पड़ते हैं।

उत्पादन तो उत्पादन रहा, वितरण भी देख लीजिये। पन्द्रह वर्ष पहले दवा कम्पनियों के प्रतिनिधि चिकित्सकों को सैम्पल देते थे जिनकी परख दवा की बिक्री का एक आधार बनती थी। अब मेडिकल रिप्रेजेन्टिव दवाइयों के सैम्पल नहीं बाँटते बल्कि डॉक्टरों को मैनेज करते हैं – **गाड़ी चाहिये तो वर्ष में इतने लाख की दवा बिकवाइये,** विदेश सैर- सपाटे के लिये इतनी दवा बिकवाइये, मोबाइल और उसका खर्चा, नकद! डॉक्टरों के सम्मेलनों की प्रायोजक दवा कम्पनियाँ होती हैं और प्रत्येक डॉक्टर को भोजन, मद्य एवं अन्य पेय, उपहार देने के संग- संग चुने हुये डॉक्टरों के होटल व परिवहन का प्रबन्ध भी करती हैं। परिणामस्वरूप 40 से 50 प्रतिशत दवायें जो निजी चिकित्सक अथवा प्रेरित सरकारी डॉक्टर लिखते हैं उनकी उपचार में आवश्यकता ही नहीं होती। **मरीज को दी जाती आधी दवाइयाँ फालतू होती हैं!** आप इस पर भी ताज्जुब करोगे कि एक हजार पेटेन्ट दवाइयाँ अंकित मूल्य के एक तिहाई पर थोक में उपलब्ध हैं – लोकल दवाओं का जिक्र नहीं है यह। अंकित मूल्य के एक तिहाई पर सप्लाई के बाद भी पेटेन्ट दवा निर्माता कम्पनियाँ आर्डर दिलवाने के लिये कमीशन देने को तैयार रहती हैं! जनता की जेब पर डाका .... डाका छोटा शब्द लगता है। और, स्वास्थ्य की मुफ्त देखभाल की अवधारणा को ही धराशायी करने के लिये यूरोपियन यूनियन ने हरियाणा सरकार को 20 करोड़ रुपये दिये हैं। लोगों में यह भावना पैदा करो कि चिकित्सा के लिये लोग पैसे दें, फ्री कुछ भी नहीं है, मरने के लिये भी पैसे देने होंगे.....

बीमारियाँ क्यों हो रही हैं? इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। ध्यान बस उपचार पर है.... जेब पर है। टेक्नोलॉजी, कम्प्युटरों को देखता हूँ तो सब के लिये पर्याप्त चिकित्सा प्रबन्ध व स्वास्थ्य की देखभाल सम्भव लगती हैं। परन्तु समाज व्यवस्था को देखता हूँ तो.... तो भी सुधार की मेरी इच्छा दम नहीं तोड़ती: लोग चैन से जी तो नहीं सकते फिर भी शान्ति से लोग मर तो सकें इसके प्रबन्ध में मैं आज के कर्णधारों को सहयोग देने को तैयार रहता हूँ, इनके स्वांग- साँग को भी झेल लेता हूँ। (जारी)■

और बातें यह भी (पेज दो का शेष)

सिलसिला चला कर इस समय मात्र 498 परमानेन्ट वरकर छोड़े थे। और, अब हम 498 में से भी 250 को निकालने के लिये कम्पनी ने कहने को वी.आर.एस. लगाई है पर असल में सी.आर.एस. से हमें काट रही है। स्वेच्छा से किसी द्वारा नौकरी छोड़ने की बात ही नहीं है, हमारे साथ जबरदस्ती की जा रही है। तीस साल से जहाँ काम करता था वहाँ से हटा कर मजदूर को ऐसी जगह काम पर लगाया जा रहा है कि अत्याधिक परेशान हो और नौकरी छोड़ने की कम्पनी की बात मान जाये। यूनियन कम्पनी से मिली हुई है। कम्पनी ने डुगडुगी तो बाकी बची नौकरी के बदले बेसिक व डी.ए. देने की बजाई है लेकिन **हैदराबाद इन्डस्ट्रीज** में अलाउन्स ज्यादा हैं और तनखा कम है – 31 साल की नौकरी वाले मजदूर की बेसिक जमा डी.ए. मात्र 3735 रुपये है।"

सुपर आटो इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "9जे सैक्टर- 6 स्थित फैक्ट्री में बरसों से काम कर रहे लोग कैजुअल वरकर हैं– एक- दो दिन का ब्रेक कर कम्पनी फिर रख लेती है। कैजुअलों की ई.एस.आई. तथा प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं हैं।"

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद–121001

लुधियाना से-

पंजाब का प्रमुख औद्योगिक नगर है लुधियाना। यहाँ भी मशीन के साथ काम करते- करते हम मजदूर मशीन बन जाते हैं। साहब लोग हमें इन्सान नहीं समझते और गाली- गलौच, मार- पीट करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। यहाँ भी फैक्ट्रियों में कानूनों की सरेआम धज्जियाँ उड़ाई जा रही हैं। पंजाब सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन से भी कम वेतन देना, पक्के रजिस्टर पर हाजरी नहीं लगाना, ई.एस.आई. और प्रोविडेन्ट फण्ड लागू नहीं करना, दिहाड़ी काट लेना, बोनस नहीं देना, वार्षिक वेतन वृद्धि नहीं देना, मई दिवस की छुट्टी नहीं देना इत्यादि लुधियाना में फैक्ट्रियों में आम बातें हैं। कारखानों के इस शहर में अधिकांश यूनियनें दुकानदारी के हिसाब से ही चलती हैं। हम मजदूर अपने साथ हो रहे अन्याय को अन्दर ही अन्दर समोये रहते हैं और हमारा गुस्सा बढता रहता है जिसकी एक झलक पिछले दिनों दिखी।

✱ सितम्बर माह में **एवन साइकिल** कम्पनी ने बीस प्रतिशत की जगह आठ दशमलव तीन- तीन प्रतिशत बोनस देने की घोषणा की। कम्पनी कई वर्ष से वार्षिक वेतन वृद्धि भी नहीं दे रही और ठेके पर काम कर रहे मजदूरों के पीस रेट भी नहीं बढा रही। अन्याय को पीते आये मजदूरों ने बोनस कम देने की घोषणा पर चाणचक्क उत्पादन ठप्प कर दिया। हालात को देखते हुये एवन साइकिल कम्पनी ने मजदूरों को तत्काल बीस प्रतिशत बोनस दिया।

✱ **कुमार मोटर पार्ट्स** कम्पनी इस कदर धक्केशाही कर रही थी कि एक दिन की छुट्टी करने पर मजदूरों की दो दिन की दिहाड़ी काट लेती। बोनस भी कम्पनी ने पूरा नहीं दिया तो चाणचक्क काम बन्द कर मजदूर फैक्ट्री गेट पर बैठ गये और फिर जलूस निकाला। कुमार मोटर पार्ट्स कम्पनी ने फौरन मजदूरों को पूरे बोनस का भुगतान करने में ही अपनी भलाई समझी।

✱ लगातार बढ रही महँगाई के दृष्टिगत वेतन में दस प्रतिशत वार्षिक वृद्धि तो होनी ही चाहिये लेकिन **भोगल एण्ड सन्स** कम्पनी 15- 20 रुपये में ही टरका देती थी। दस प्रतिशत वार्षिक वेतन वृद्धि के लिये मजदूर फैक्ट्री गेट पर बैठ गये। कम्पनी ने पुलिस बुला ली और पंजाब पुलिस अधिकारियों ने कम्पनी के इशारे पर मजदूरों पर अन्धाधुन्ध लाठियाँ बरसवाई। दो हफ्ते की जद्दोजहद के बाद कम्पनी सब मजदूरों को फैक्ट्री के अन्दर ले गई। दस प्रतिशत वार्षिक वेतन वृद्धि की बात कम्पनी नहीं मानी। इस सब के दौरान यूनियन कम्पनी के पक्ष में रही।

✱ उत्पादन इतना निर्धारित कर दिया कि 8 घण्टे में हो ही नहीं– बिना किसी ओवर टाइम भुगतान के फैक्ट्री में रुक कर पूरा करके दो। सप्ताह का निर्धारित **(बाकी पेज दो पर)**

बन्दी वाणी (4)

[अमरीका सरकार ने "अपने" बीस लाख लोगों को सजा दे कर और आठ लाख को विचाराधीन कैदी के रूप में बन्दी बना रखा है। यूँ तो सम्पूर्ण संसार ही जेलखाने में ढाल दिया गया है, अधिकाधिक ढाला जा रहा है, फिर भी, सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर जकड़ हम से अधिक होती है। अनुवाद की और सन्दर्भों की दिक्कतों के कारण यहाँ हम अपने शब्दों में अमरीका सरकार के कैदखानों में बन्द लोगों की वाणी को प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं।]

चन्द हफ्ते पहले जेल अस्पताल में एक युवक मृत पाया गया था। अधिकारियों ने इसे आत्महत्या बताया।

मैं उस युवक को नहीं जानता था और किसी ऐसे को नहीं ढूँढ पाया जो उसे जानता हो। उसका नाम भी पता नहीं चला। मैं अधिक प्रश्न नहीं पूछना चाहता अन्यथा मुझ पर आरोप लग सकता है कि ... ज्यादा सवाल पूछ रहा हूँ। इस बात से मुझे बहुत तकलीफ होती है कि जेल जीवन के दैनिक शोर- शराबे में युवक की मृत्यु सरसरी फुसफुसाहट- सी खो गई। मेरी हार्दिक इच्छा है कि कोई तो जाने कि युवक की यहाँ कारागार में मृत्यु हो गई है।

अमरीका सरकार के जेल विभाग के अनुसार सन् 2000 में कैदियों द्वारा आत्महत्या के 143 प्रयास हुये – 5 की मृत्यु हो गई। सन् 01 में आत्महत्या के 146 प्रयास ... जब से मैं कारागार में हूँ, अमरीका सरकार के जेलखानों में 2500 कैदियों ने आत्महत्या के प्रयास किये हैं और इन में 90 बन्दियों की मृत्यु हो गई।

हाल ही में युवक की मृत्यु ने मुझे जोह्न (उसका असली नाम नहीं) के बारे में विचारमग्न किया। बात 15 वर्ष पहले की है। उस समय मादक पदार्थ, दारू, जबरन वसूली, बलात्कार, लूट और जब- तब हत्या अमरीका में जेल जीवन के प्रमुख अंश थे। जेल के डी- ब्लॉक के पिछवाड़े में दिन में अधिकारी बल्ब लगवाते और रात को वे फोड़ दिये जाते। तब वहाँ कुछ भी हो सकता था और अक्सर होता था। गार्ड रात को वहाँ नहीं ही जाते थे। जोह्न और मैं तब उस डी- ब्लॉक में कैद थे।

उस समय मैं मादक पदार्थ लेता था और पैसों के लिये घोटालों में लिप्त रहता था। दारू बेचना जेल में मेरी नियमित हरकत थी और जोह्न मेरा बेहतरीन ग्राहक था। वह 45- 50 का लगता था पर आयु कम हो सकती थी। वह हर समय उदास और थका हुआ लगता था। स्नान करने पर भी बिना नहाया लगता जोह्न अपनी कोठरी में पटरे पर सोया अथवा बैठा रहता था। उसका श्वेत- श्याम टी.वी. आमतौर पर चलता रहता था पर वह उसे देखता नहीं था। जोह्न बाँहें लटकाये, सिर नीचे किये बैठा रहता और फर्श को घूरता रहता।

जोह्न से जेल में कोई मिलने नहीं आता था। वह दूरभाष का प्रयोग नहीं करता था, वह कभी ताश भी नहीं खेलता था। जज्बे जैसी एकमात्र चीज उसमें दारू के लिये थी। उसे शायद फौज से पैसे मिलते थे और लोग उससे उन पैसों को लेने की जुगत भिड़ाते रहते थे। उसके कोई सच्चे मित्र नहीं थे।

कभी- कभी मैं सोचता था कि जोह्न इतनी पीता क्यों है? वह जब नहीं पीता था तब भी उदास रहता था और जब पीता था तब भी उदास रहता था। वह ऐसे धीमे चलता था आया किसी प्रतिरोध का सामना कर रहा हो। **किसी ने मुझे बताया था कि जोह्न वियतनाम में युद्ध में रहा था। उसे देख कर मुझे अहसास होता था कि उसका कोई अंश वियतनाम से वापस अमरीका लौटा ही नहीं।** मुझे कभी पता नहीं चला कि उसने क्या किया जो जेल हुई।

एक दिन नाश्ते के लिये जाते समय हम जोह्न से मिले। रात वह नशे में धुत रहा था पर तब बत्ती जलाये बैठा था। मुझे आश्चर्य हुआ। हाल- चाल पूछने पर उसने जो कहा वह हमें समझ में नहीं आया और उसे बैठा छोड़ हम नाश्ता करने चले गये।

नाश्ता कर लौटते समय हम ने देखा कि जोह्न ने बत्ती बुझा दी थी। कोठरी में अन्धेरा था पर बाहर से आती रौशनी में मैंने देखा कि जोह्न ने खुद के फाँसी लगा ली थी। एक बन्दा गार्ड को बुलाने दौड़ा पर मैं हिल न सका। अनन्तकाल तक जैसे मैं खड़ा- खड़ा उसे देखता रहा। उसकी तरह मैं भी जड़ हो गया था। लोग कुछ कह रहे थे पर मुझे नहीं पता चल रहा था कि क्या कह रहे हैं। आवाजें दबी- दबी थी आया मैं पानी में डूबा हूँ। हर कोई इतना दूर दीख रहा था। ऐसा लग रहा था आया नाश्ते से पहले जोह्न को देखे वर्षों बीत गये थे। ऐसा सम्भव नहीं लगता था कि इतनी जल्दी चीजें इतनी बदल सकती हैं। मुझे यह वास्तविक नहीं लग रहा था। गहरा दुख, क्रोध, डर और इन सब के अभाव की विपरीत स्थिति वाली भावनायें एक ही समय मुझ में थी। अन्धकारमय सूनापन मुझे गड़प रहा था। वहाँ जुटे लोगों को धकेल कर मैं अपनी कोठरी पहुँचा। जोह्न क्या हुआ ? शायद दारू काम नहीं कर रही थी ?

जब तक उन्होंने जोह्न का शरीर हटाया, मैं सुन्न हो गया था। जोह्न के बारे में सोचने से अपने को रोकने के लिये मैंने अपनी नसों में इतना मादक द्रव्य उडेल दिया था कि भेड़ों का एक छोटा झुण्ड मर सकता था.....

जोह्न और उन सब अभागों जिन्होंने जेल की दीवारों के अन्दर दम तोड़ दिया उनकी याद को अर्पित है यह तुच्छ श्रद्धाँजली।

– थॉमस, अमरीका सरकार के कारागार में बन्दी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।